२ भारत : १९६० के बाद की घटनाएँ

वर्ष १९४७ में भारत स्वतंत्र हुआ। १९५० में भारत ने संविधान का अंगीकार किया और भारत प्रभुता संपन्न, लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया। भारतीय समाज विविधताओं से संपन्न है तथा इस समाज में विविध भाषा, जाति, वंश और धर्म के लोग रहते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात के प्रारंभिक समय में भारत को आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक विकास से जुड़ी समस्याओं को हल करना था। योजना आयोग का गठन करना और औद्योगिकीकरण को प्राथमिकता देना, इन दो बातों को आर्थिक विकास को साध्य करने और देश की दरिद्रता की समस्या को दूर करने के उपाय के रूप में स्वीकार किया गया। चुनावों को सफलतापूर्वक संपन्न कराया जाना तथा लोकतांत्रिक परंपराओं के प्रति हमारे विश्वास के कारण हमें राजनीतिक स्थायित्व प्राप्त करना संभव हुआ। साथ ही; उन अनगिनत सामाजिक सुधारों को प्रत्यक्ष में उतारने के प्रयास किए गए; जिन सुधारों में कमजोर समाज के सभी वर्गों के लिए विभिन्न कार्यक्रमों और नीतियों का समावेश था।

१९६० का दशक : भारत की राजनीतिक परिस्थितियों को प्रभावित करने वाली कई घटनाएँ वर्ष १९६० के दशक में घटित हुईं। पुर्तगालियों के आधिपत्य में गोआ, दमन और दीव प्रदेश थे। ये प्रदेश पुर्तगालियों के आधिपत्य से मुक्त हुए तथा वे भारतीय संघ राज्य के अंग बने। देश की उत्तरी सीमा पर वर्ष १९५० से ही भारत और चीन के बीच तनाव बढ़ता जा रहा था। अंततः इस तनाव की परिणिति दोनों देशों के बीच सीमा रेखा युद्ध में हुई। यह युद्ध मैकमोहन (वर्ष १९६२) रेखा के क्षेत्र में हुआ।

पं.जवाहरलाल नेहरू

भारत स्वतंत्र होने के पश्चात के कालखंड में प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत का नेतृत्व किया। वे भारत की विदेश नीति के शिल्पकार थे। भारत के सामाजिक -आर्थिक विकास में उनके द्‌वारा दिया गया योगदान बहुमूल्य है। वर्ष १९६४ में भारत के प्रधानमंत्री पं. नेहरू का निधन हुआ। इसके पश्चात लालबहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री बने। उनके कार्यकाल में वर्ष १९६५ में भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर समस्या को लेकर युद्ध हुआ। दोनों देशों के बीच सोवियत रशिया ने मध्यस्थी (बीच-बचाव) करने का प्रयास किया। वर्ष १९६६ में लाल बहादुर शास्त्री का ताश्कंद में निधन हुआ। लालबहादुर शास्त्री ने ही देश को 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया और इसी नारे के माध्यम से उन्होंने भारतीय किसान और जवान (सैनिक) का महत्त्व रेखांकित किया।

लालबहादुर शास्त्री

इंदिरा गांधी

वर्ष १९६६ में श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधानमंत्री बनीं। उनकी निर्णयक्षमता प्रशंसनीय थी। उन्होंने बैंकों को राष्ट्रीयकरण किया तथा जागीरों का वेतन बंद किया। उनके इस निर्णय के दूरगामी परिणाम भी हुए। उनके कार्यकाल में पाकिस्तान ने पूर्व पाकिस्तान के प्रति दमन नीति का अवलंब किया। यही दमन नीति पूर्व पाकिस्तान में बहुत बड़ा आंदोलन शुरू होने का कारण बनी।

इस आंदोलन का नेतृत्व शेख मुजीब-उर-रहमान की मुक्ति सेना ने किया। पूर्व पाकिस्तान की उस समस्या का परिणाम भारत पर भी हुआ क्योंकि पूर्व पाकिस्तान से करोड़ों शरणार्थी भारत में आ गए थे।

वर्ष १९७० का दशक : वर्ष १९७१ में भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध की

परिणति बांग्ला देश के स्वतंत्र होने में हुई। इस कार्य में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का सक्षम नेतृत्त्व महत्त्वपूर्ण माना जाता है। परमाणु ऊर्जा का उपयोग शांति स्थापित करने हेतु करना हमारी नीति है। इस नीति के एक अंग के रूप में भारत ने वर्ष १९७४ में राजस्थान के पोखरण में भूमि के अंदर सफल परमाणु परीक्षण किया। वर्ष १९७५ में सिक्किम की जनता ने भारतीय संघराज्य में विलीन होने के पक्ष में मतदान किया और उसके अनुसार भारतीय संघराज्य में सिक्किम को राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ।

इस दशक में सरकार ने संविधान में उल्लिखित आपातकालीन स्थिति से संबंधित प्रावधान के आधार पर राष्ट्रीय आपातकाल घोषित कर दिया। आपातकाल में भारतीय नागरिकों के मौलिक अधिकार स्थगित किए गए। आपातकाल के कारण भारतीय प्रशासन व्यवस्था में अनुशासन आ गया परंतु इस कारण मानवीय अधिकार भी सिकुड़ गए। राष्ट्रीय आपातकाल की यह कालावधि वर्ष १९७५ से १९७७ तक रही। इसके पश्चात आम चुनाव संपन्न हुए।

आपातकाल की पार्श्वभूमि में कई विरोधी दल इकट्ठे आए और उन्होंने जनता पार्टी का गठन किया। इस नई गठित जनता पार्टी ने श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्ववाली काँग्रेस पार्टी को बुरी तरह से पराजित किया। मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने, परंतु उनके नेतृत्ववाली जनता पार्टी की सरकार आपसी मतभेदों के कारण अधिक समय तक चल नहीं सकी। इसके बाद चरणसिंह प्रधानमंत्री बने। उनकी सरकार भी अल्पकाल की रही। वर्ष १९८० में पुनः चुनाव हुए और श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में काँग्रेस पार्टी पुनः सत्ता में आई।

वर्ष १९८० का दशक : इस दशक में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को अनेक नई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। पंजाब में सिखों ने स्वतंत्र खलिस्तान राज्य की माँग को लेकर आंदोलन प्रारंभ किया। इस आंदोलन ने अत्यंत उग्र और भयानक स्वरूप धारण किया। वास्तव में इस आंदोलन को पाकिस्तान का समर्थन प्राप्त था। वर्ष १९८४ में अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में आश्रय लिए हुए आंतकवादियों को मंदिर से निष्कासित कर देने के लिए भारतीय सेना को वहाँ भेजना पड़ा। श्रीमती इंदिरा गांधी के सुरक्षा रक्षक दल के रक्षकों ने ही उनकी हत्या की। इसी कालावधि में पूर्वोत्तर भारत में उल्फा संगठन द्वारा बहुत बड़ा आंदोलन चलाया गया।

वर्ष १९८४ में राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री पद की बागडोर अपने हाथ में ली। उन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनेक सुधार लाने का प्रयास किया। राजीव गांधी ने श्रीलंका के तमिल अल्पसंख्यकों की समस्या को हल करने में पहल की। तमिल समुदाय को देश के भीतर स्वायत्तता देकर श्रीलंका की अखंडता को बनाए रखने के श्रीलंका के प्रस्ताव को उन्होंने समर्थन दिया था, परंतु इस संदर्भ में उनके द्वारा किए गए प्रयासों को सफलता नहीं मिली।

राजीव गांधी

१९८९ में हुए आम चुनाव में काँग्रेस पार्टी की पराजय हुई। इसके बाद अलग-अलग दल इकट्ठे हुए और जनता दल के विश्वनाथ प्रताप सिंह भारत के प्रधानमंत्री बने। उन्होंने अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण नीति निर्धारित की। यह उनका सबसे म हत्त्वपूर्ण योगदान माना जाता है। दल के अंतर्गत चलने वाले विवादों के कारण वे अधिक समय तक प्रधानमंत्री पद पर बने नहीं रह सके। वर्ष १९९० में चंद्रशेखर भारत के प्रधानमंत्री बने। उनकी सरकार भी अल्पकालिक रही। वर्ष १९९१ में चुनाव प्रचार के दौरान श्रीलंका के लिट्टे (LTTE) संगठन ने राजीव गांधी की हत्या की ।

१९८० के दशक के अंत में जम्मू और कश्मीर में असंतोष धधकना प्रारंभ हुआ। यह समस्या अधिकाधिक गंभीर बनती गई और अब इस समस्या ने आतंकवाद का स्वरूप धारण कर लिया है। वहाँ चलने वाली आतंकवादियों की गतिविधियों ने कश्मीरी पंडितों को वहाँ से भाग जाने के लिए विवश किया।

वर्ष १९९१ के बाद के परिवर्तन: विश्व और भारत के इतिहास में वर्ष १९९१ महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों का वर्ष रहा। लगभग इसी वर्ष सोवियत रशिया का विघटन हुआ और विश्व में चल रहा शीतयुद्ध समाप्त हो गया। भारत में पी.वी.नरसिंह राव की सरकार ने भारत की अर्थव्यवस्था में कई परिवर्तन लाए ।

वर्ष १९९६ से १९९९ की कालावधि में भारत की लोकसभा में किसी भी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं था। इस काल में प्रधानमंत्री के रूप में इन्होंने कार्य किए अटलबिहारी वाजपेयी, एच.डी.देवेगौड़ा और इंद्रकुमार गुजराल । अंततः वर्ष १९९९ में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सत्तासीन हुआ और अटलबिहारी वाजपेयी भारत के प्रधानमंत्री बने।

अटलबिहारी वाजपेयी

अटलबिहारी वाजपेयी ने पाकिस्तान के साथ बातचीत करने का प्रयास किया परंतु सफलता नहीं मिली। वर्ष १९९८ में भारत ने और भी परमाणु परीक्षण कर स्वयं को परमाणु अस्त्रधारी राष्ट्र के रूप में घोषित किया। वर्ष १९९९ में कश्मीर के मुद्दे पर भारत और पाकिस्तान के बीच में कारगिल में युद्ध हुआ। इस युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को पराजित किया।

भारत की अर्थव्यवस्था : स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से अर्थव्यवस्था का आधुनिकीकरण, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक न्याय के साथ-साथ समाजवादी ढाँचा भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ रही हैं। उद्योगों की स्थापना कर भारत को आधुनिकीकरण और आत्मनिर्भरता को साध्य करना था। सामाजिक न्याय पर आधारित अर्थव्यवस्था को नियोजन द्वारा अस्तित्व में लाना था। अतः योजना आयोग का गठन किया गया और पंचवर्षीय योजना को प्रारंभ किया गया।

वर्ष १९९१ में नरसिंह राव की सरकार ने आर्थिक सुधारों को कार्यान्वित करना प्रारंभ किया। इन आर्थिक सुधारों को आर्थिक उदारीकरण कहते हैं। इस नीति के कारण भारत की अर्थव्यवस्था संपन्न बनी। भारत में विदेशी निवेश में वृद्धि हुई। उद्योग, विज्ञान क्षेत्र के कुशल भारतीय व्यवसायियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को सुधारने हेतु सहयोग दिया। सूचना एवं प्राद्योगिकी क्षेत्र के उद्योगों ने रोजगार के नए अवसर पैदा किए। वर्ष १९९१ के पश्चात हुए इन परिवर्तनों का वर्णन 'वैश्वीकरण' के रूप में भी किया जाता है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी : भारत ने आत्मनिर्भर बनने के लिए जो प्रयास किए, उनमें दो महत्त्वपूर्ण घटनाओं का समावेश किया जा सकता है। वर्ष १९६५ में प्रारंभ हुई हरितक्रांति के जनक डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन थे। उन्होंने नवीन वैज्ञानिक तकनीकी का उपयोग कर खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि की। डॉ. वरगिस कुरियन द्वारा दूध उत्पादन क्षेत्र में चलाए गए सहकारिता आंदोलन के प्रयोग से भारत में दूध का उत्पादन बड़ी मात्रा में बढ़ा। इसे 'धवलक्रांति' भी कहते हैं।

भारत ने परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्रों में भी बहुत उन्नति कर ली है। डॉ. होमी भाभा ने भारत में परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की नींव

रखी। परमाणु ऊर्जा का उपयोग बिजली निर्माण, औषधियाँ और रक्षा जैसे शांतिपूर्ण उद्‌देश्यों के लिए करने पर भारत ने सदैव बल दिया है। भारत ने अंतरिक्ष प्रौद्‌योगिकी में भी ठोस कार्य किया है। वर्ष १९७५ में पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया। आज भारत के पास एक सफल अंतरिक्ष योजना है। इसके अंतर्गत अनेक उपग्रह अंतरिक्ष में छोड़े गए हैं। दूर संचार क्षेत्र में भी उन्नति हुई है।

सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन : इसी कालावधि में भारत के सामाजिक क्षेत्र में भी कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

उनमें से कुछ परिवर्तन महिलाओं के सशक्तीकरण की समस्याओं से संबंधित हैं तो कुछ उपेक्षित घटकों की उन्नति हेतु स्वीकार की गई नीतियों से संबंधित हैं। देश की महिलाओं और बालकों के सर्वांगीण विकास को गति देनी थी। फलतः वर्ष १९८५ में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत 'महिला और बाल विकास विभाग' का गठन किया गया। महिलाओं को सामाजिक न्याय का आश्वासन मिले और योजनाओं के कार्यान्वयन को सहायता प्राप्त हो, इस उद्‌देश्य को लेकर जो कानून बनाए गए, उनमें दहेज प्रतिबंधित कानून, समान वेतन कानून का समावेश था। ७३ वें और ७४ वें संविधान संशोधन द्‌वारा स्थानीय शासन संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षित स्थान रखे गए।

संविधानकारों को लगा था कि जातिव्यवस्था के कारण भारतीय समाज के वर्गों/समूहों को प्रतिष्ठा और समान अवसरों से वंचित होना पड़ेगा। इस समस्या का हल ढूँढ़ने के लिए वर्ष १९५३ में 'काकासाहेब कालेलकर आयोग' की स्थापना की गई। वर्ष १९७८ में बी.पी.मंडल की अध्यक्षता में अन्य पिछड़े वर्गों की समस्याओं पर विचार करने के लिए और एक आयोग गठित किया गया। विविध सेवाओं और संस्थानों में पिछड़ी जाति के वर्गों को उचित प्रतिनिधित्व उपलब्ध करा देने के लिए आरक्षण की नीति को स्वीकार किया गया। अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोग उच्च वर्गों द्‌वारा की जाने वाली हिंसा, भय और दमन तंत्र से मुक्त रहकर प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान के साथ जी सकें; इसके लिए वर्ष १९८९ में सरकार ने 'अत्याचार विरोधी' (एट्रोसिटी) कानून पारित किया।

वैश्वीकरण : वैश्वीकरण के कारण अर्थनीति, राजनीति, विज्ञान एवं प्रौद्‌योगिकी, समाज तथा संस्कृति जैसे सभी क्षेत्रों में अनेक परिवर्तन हुए। उनमें से कुछ परिवर्तनों की चर्चा उपयुक्त परिच्छेद में की है। वैश्विक स्तर पर भारत सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण देश के रूप में उदित हुआ है। भारत G–20 और BRICS (Brazil, Russia, India, China, South Africa) जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों का एक महत्त्वपूर्ण सदस्य देश है। भारत ने दूरसंचार, प्रौद्‌योगिकी क्षेत्र में हुई एक महत्त्वपूर्ण क्रांति को अनुभव किया है।

संपूर्ण भारत में भ्रमणध्वनि (मोबाइल) और अंतरजाल (इंटरनेट) सेवाओं तथा उपग्रह पर आधारित दूरसंचार सेवाओं का जाल फैला हुआ है। राजनीतिक क्षेत्र में भी स्थिर लोकतंत्र किस प्रकार सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है; इसे भारत ने पूरे विश्व को दिखा दिया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि भारतीय लोगों के और विशेष रूप से युवाओं की जीवनशैली में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। ये परिवर्तन उनकी भोजन की आदतों, वेशभूषा, भाषा, मान्यताएँ द्‌वारा दिखाई देते हैं।

अगले पाठ में हम भारत के सम्मुख कुछ आंतरिक चुनौतियों का अध्ययन करेंगे।

* * *

स्वाध्याय

१. (अ) दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए।

(१) श्रीलंका के तमिल अल्पसंख्यकों की समस्याओं को हल करने के लिए पहल करने वाले प्रधानमंत्री .... थे।

(अ) राजीव गांधी

(ब) श्रीमती इंदिरा गांधी

(क) एच.डी.देवेगौड़ा

(ड) पी.वी.नरसिंह राव

(२) भारतीय हरितक्रांति के जनक............हैं।

(अ) डॉ. वरगिस कुरियन

(ब) डॉ. होमी भाभा

(क) डॉ. एम.एस.स्वामीनाथन

(ड) डॉ. नॉमेन बोरलॉग

(ब) निम्न में से विसंगत जोड़ी पहचानिए।

(१) इंदिरा गांधी - राष्ट्रीय आपातकाल

(२) राजीव गांधी - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में सुधार

(३) पी.वी.नरसिंह राव- आर्थिक सुधार

(४) चंद्रशेखर - मंडल आयोग

२. (अ) दी गई सूचना के अनुसार कृति पूर्ण कीजिए।

पाठ में उल्लिखित जानकारी की सहायता से प्रधानमंत्री और उनकी कालावधि की कालानुक्रम तालिका तैयार कीजिए।

(ब) टिप्पणी लिखिए।

(१) वैश्वीकरण

(२) धवल क्रांति

३. निम्न कथनों को कारणसहित स्पष्ट कीजिए।

(१) मोरारजी देसाई की सरकार अल्पकाल की रही।

(२) अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में सेना भेजनी पड़ी।

(३) भारत में योजना आयोग का गठन किया गया।

४. निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए।

(१) विश्व और भारत के इतिहास में वर्ष १९९१ महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों का वर्ष किस प्रकार रहा?

(२) भारतीय अर्थव्यवस्था की क्या विशेषताएँ हैं ?

५. पाठ की सहायता से भारत के सम्मुख आंतरिक और बाहरी चुनौतियों और भारत की सामर्थ्य इनकी सूची पूर्ण कीजिए।

आंतरिक और बाहरी चुनौतियाँ	सामर्थ्य
जैसे- भारत-पाकिस्तान युद्ध	विविधता में एकता
....	....
....	परमाणु अस्त्रों से सुसज्ज
अलगाववाद (पृथक्कतावादी)	....

उपक्रम

(१) भारत-पाकिस्तान युद्ध में वीरता प्रदर्शित करने वाले भारतीय सैनिकों की जानकारी प्राप्त कीजिए।

(२) कारगिल युद्ध के वीर सैनिकों के छायाचित्र इकट्ठे कीजिए।

(३) अब तक बने भारत के प्रधान मंत्रियों के चित्रों का संग्रह कीजिए।

(४) डॉ. होमी भाभा अनुसंधान केंद्र की जानकारी प्राप्त कीजिए।

(५) दूध उत्पादन के माध्यम से कौन-से व्यवसाय चलते हैं? उनकी जानकारी छायाचित्रों के साथ प्राप्त कीजिए।

7FI8D3